disbarding of N.W.D.A. These Committees feel that the project was good and has evolved a very good project. But it is unfortunate that this recommendation was not accepted. The Agriculture Minister is here. For his consideration, I would like to quote the Parliamentary Standing Committee Report on Agriculture. In 1995-96, it recommended for the disbanding of the National Development Water Agency. The Minister of Water Resources does not find himself competent enough to convince the States concerned. The benefits of the link, I say Madam, the link system has not been understood for lack of understanding. Then, Madam, if this Peninsular river development scheme had been implemented then Almatti issue would not have come up since surplus water from Mahanadi and Godavari would have been taken care of in that area proposed to be irrigated by Almatti Dam along with power generation and other things. So in this way, Madam, if this project, this Ganga-Cauvery project is implemented, I think we will become self-sufficient. We need not depend on foreign countries for import of foodgrains and other things. It will generate employment potential and several other potentials we can exploit and we will be self-sufficient. I demand through this august House that the Central Government should come forward to implement this project.

Need to increase the production capacity of R.B.H.M. Jute Mills at Katihar in Bihar

श्री नरेश यादव (बिहार): उपसभाध्यक्ष महोदया, मैं आपका ध्यान बिहार राज्य में एकमात्र जूट मिल जो कटिहार में स्थापित है, की ओर दिलाना चाहता हूं। एक मिल तो एक वर्ष से बंद है और दूसरी भी बन्दी के कगार पर है। अभी हमारे यहां बैठे हुए माननीय मंत्री श्री मिश्र जी का ध्यान भी इस ओर आकर्षित करना चाहता हूं कि 2500 मजदूरों के जीवन-मरण का सवाल है। इसलिए इस पर अविलम्ब ध्यान दिया जाए। महोदया, नेशनल जूट मैन्युफैक्चरर्स कारपोरेशन की इकाई आर०बी०एच०एम० जूट मिल, कटिहार-बिहार की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा कि निगमालय द्वारा साजिश के तहत इस मिल को बंद कराने का प्रयास हो रहा है। सन् 1985 में मंत्रालय, निगमालय एवं बिहार सरकार के श्रम विभाग के बीच सहमति हुई थी कि मिल की पुरानी मशीनरी को बदल कर उसका आधुनिकीकरण किया जाएगा जिससे इस मिल की दैनिक उत्पादन क्षमता प्रतिदिन 20 मीट्रिक टन से बढ़ा करके 60 मीट्रिक टन हो जाएगी जिससे 2500 मजदूरों को रोजगार मिल सकेगा। आज तक इस मिल का आधुनिकीकरण नहीं हुआ जबकि बिहार सरकार ने कटिहार स्थित आर०बी०एच०एम० जूट मिल के आधुनिकीकरण के लिए एक करोड़ रुपया उद्योग विभाग द्वारा निगमालय को दे दिया गया है। फिर भी अभी तक इसका उपयोग आधुनिकीकरण पर नहीं किया गया है क्योंकि मंत्रालय से जो आबंटन होना था उसे नहीं किया गया। उल्टे मजदूरों की छंटनी की जा रही है जिससे कि मजदूरों एवं वहां के आम नागरिकों के बीच काफी असंतोष है। महोदया, मैं आपके माध्यम से कपड़ा मंत्री जी का ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा कि अविलम्ब कटिहार स्थित एम०जे०एम०सी० की इकाई आर०बी०एच०एम० जूट मिल का आधुनिकीकरण किया जाए ताकि मजदूरों की छंटनी बंद हो। यह इलाका जूट उत्पादक इलाका है। कटिहार, पुरनिया, सहरसा, किशनगंज, अररहरिया और पश्चिम बंगाल के दो-तीन काफी जूट उत्पादक जिले हैं। वहां का किसान जूट उत्पादन करता है। एकमात्र किसान की जो फसल है और जो मनी क्रॉप जाता है उसके लिए जूट है। इसलिए मैं आपके माध्यम से आग्रह करना चाहूंगा कि अविलम्ब उस मिल की जो क्षमता है, उस क्षमता को 20 मीट्रिक टन से 60 मीट्रिक टन कराया जाए और इसके लिए मशीनों का आधुनिकीकरण करना आवश्यक है। इसी के साथ आपने मुझे ऐसे महत्वपूर्ण मुद्दे पर बोलने का अवसर दिया, इसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

Sale of Children by Mothers for a paltry sum of Rs. 100—150 toward of Hunger and Starvation in Drought-affected Districts of Orissa

SHRI NARENDRA PRADHAN (Orissa) : Madam, I am raising an issue where a mother, Nura Gahira, resident of Govindpur village in Bangamunda block has sold her own baby for Rs. 150/- and for a handful of broken rice. She gave this statement before the House Committee of the Orissa Legislative

Assembly. The Committee was visiting the drought-affected areas of Bolangir and Bargarh districts. In the presence of the District Administration, she gave this statement. It is also published in an Oriya daily, 'Sambad'. The founder of the Sambad is the present Chief Minister and the editor is his own son-in-law who is a Member of the other House and also a Member of the Press Council. So, this news has importance. It can never be a vague news. Representatives of the Human Rights Commission had also visited the State to see the condition of the affected people. The Commission admitted that there were starvation deaths. It is widely published in the newspapers.

Madam, all the able males and females have left the village, leaving behind the old and disabled persons. There is no food and even drinking water. The condition is miserable. We have several schemes—the Nischit Rojgar Yojana, JRY, Old Age Pension Scheme, Widow Pension Scheme and Mid-Day Meal Programme. Apart from these schemes, our Government provides rice at Rs. two a kilogram in the tribal areas of the State. After this normal help, the hon. Prime Minister has also given Rs. 50 crores as special assistance.

In spite of all this, the condition of the people has not improved. The money earmarked for this purpose is either diverted for other purposes or not spent properly. How can this House remain as a silent spectator to such a grim situation in Orissa? The hon. Chairman had given an assurance that a House Committee would be constituted and it would visit the State to have a first-hand look at the misery of the people. It was welcomed by everybody. All political parties welcomed this. Today is the last day of this Session. But there is no indication of this House Committee so far.

Madam, please tell the people of Orissa as to who will take care of them, who will save their lives. I would say that the Government of Orissa is killing the starving people of the State. So, the Government of this country should act and take over the State Administration so as to save the lives of the affected people of Orissa.

Thank you, Madam.

Sacrifices of Freedom Fighters and Brave Men of Punjab and pitiable conditions of their Families

श्री मोहिन्दर सिंह कल्याण (पंजाब): महोदया, मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूं कि आपने एक बहुत अच्छे विषय पर मुझे बोलने का मौका दिया है। हमारे देश में आजादी हासिल करने के लिए बहुत से लोगों ने बड़ी भारी कुर्बानियां की हैं लेकिन पंजाब एक बहुत ही निराला हिस्सा है जिसने हिन्दुस्तान की आजादी की लड़ाई के लिए लड़ाई लड़ी है। हमारे पंजाब के बहुत से ऐसे लोग हैं जिनकी जेल में पैदाइश हुई। जैसा मैं आपको बता रहा हूं कि श्रीमती रजिन्दर कौर भट्टल जो भूतपूर्व मुख्यमंत्री हैं, वह जेल में पैदा हुईं। श्री विजय कुमार चोपड़ा जो हिन्द समाचार ग्रुप के डायरेक्टर हैं, वह भी जेल में पैदा हुए और श्री आई०के० गुजराल जी जो हमारे प्राइम मिनिस्टर हैं, वह भी 10 साल की उम्र में जेल में थे। इसी तरह से श्री करतार सिंह सराभा जो लुधियाना के एक छोटे से गांव में किसान के घर पैदा हुए, छोटी सी उम्र में ही उनके पिताजी ऐक्सपायर हो गये और उनके बाबाजी ने उनको अच्छी शिक्षा देने के लिए अमेरिका भेज दिया। जब सरदार करतार सिंह सराभा अमेरिका गये तो वहां जाकर उन्होंने जब भारतीयों पर जो अत्याचार हो रहे थे और भारतीयों के साथ जो नफरत की जा रही थी, उसको देखा तो उनके दिल पर भारी चोट लगी। वहां सरदार करतार सिंह सराभा का श्री रूलिया सिंह जो गदर पार्टी के बहुत ही सरगर्म वर्कर थे, उनके साथ रावता पैदा हो गया। श्री रूलिया सिंह का करतार सिंह सराभा जी पर भारी असर हुआ और वह इंकलाब की लहरों पर चलने लगे। श्री रूलिया सिंह के अन्य जो गदर पार्टी के साथी थे, वह एक गदर अखबार भी वहां से निकाला करते थे।

2.00 म०प०

सरदार करतार सिंह सराभा जी गदर पार्टी में काम करने लग गये। वे अखबार में काम करने लग गये, वे उस अखबार में अपने आर्टिकल देने लग गये। आजादी के लिए काम करने वाले लोगों पर अमेरिका में जो अत्याचार हो रहे थे उसके खिलाफ भी उन्होंने आवाज उठाई। उन्होंने अमेरिका में आजादी प्राप्त करने के लिए बहुत काम किया और वह वहां बैठकर